5

वेताल पच्चीसी-2

ध्यान दें:

संस्कृत वाङ्मय में कथा ग्रन्थों का बड़ा स्थान है। कथा ग्रन्थों को आख्यायिका इस शब्द से भी कहते हैं। प्रवृत्ति के भेद से आख्यान साहित्य के दो भाग होते हैं। उपदेशात्मक कथा अथवा नीति कथा, लोक कथा अथवा मनोरंजन कथा। नीति कथाओं में उपदेश की प्रवृत्ति प्रधान होती है। लोक कथाओं में मनोरंजन की प्रवृत्ति। पुनः लोक कथाओं में प्रायः पात्र रूप में मनुष्य होते हैं। जैसे वेताल पंचविंशति। नीति कथाओं में पशु पक्षी जैसे पंचतन्त्र। वेताल पंचविंशति के कर्ता शिवदास कहलाते हैं। इन कथाओं को पढ़ने से हमें बोध होता है। कथा सरित्सागर, बृहत्कथामंजरी, भोजप्रबन्ध, पंचतन्त्र, कथा मुक्तावली, कथा मंजरी, जातक माला वेताल पंचविंशति इत्यादि कथा ग्रन्थों में अग्रगण्य है। इस पाठ में वेताल पंचविंशति नामक ग्रन्थ से कथा को लिया गया है। उन कथा को पढ़कर आपको भी मनोरंजन और कर्तव्य और अकर्तव्य का भी बोध होगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- संस्कृत कथा के विषय में जान पाने में;
- विशेषणों के प्रयोग प्रकारों को जान पाने में;
- विविध प्रकार के तिङन्त पदों को जान पाने में;
- सन्धि समासादि के व्यवहार को जान पाने में;
- अनेक प्रकार की नीति और उपदेशों का अपने जीवन में पालन कर पाने में;
- सबसे महत्वपूर्ण कथा को पढ़कर आनन्द प्राप्त कर पाने में;

5.1) पति कौन हो?

5.1.1) पूर्वपीठिका

पाठ-5

वेताल पच्चीसी-2

ध्यान दें:

युवक केवल सुलक्षणों से युक्त नारी को ही अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त करना चाहते हैं। सभी चाहते हैं कि मेरी पत्नी इस प्रकार गुणों से युक्त, मनोहर और सुन्दर हो। लेकिन केवल सुन्दर पत्नी को प्राप्त करे तो भी सभी प्राप्त न हो। प्रस्तुत कथा में हम देखते हैं कि चार युवक विवाह के लिए आए। उस युवती के मरने से भी उन युवकों में बहुत प्रेम था। किन्तु उनमें से कौन पति होगा इस प्रकार का वेताल के द्वारा पूछे प्रश्न का उत्तर भी राजा विक्रमादित्य बिना प्रयास से देते हैं।

5.1.2) विभाग-1

अथ स राजा त्रिविक्रमसेनः पुनस्तं वेतालम् आनेतुं शिंशपातरुमूलम् अगमत्। यावत्तत्र प्राप्तः समन्तात् वीक्षते स्म तावत् तं वेतालं भूमौ कूजन्तं ददर्श। ततश्च तस्मिन् नृपे तं मृतदेहस्थं वेतालं स्कन्धमारोप्य जवात् तूष्णीमानेतुं प्रवृत्ते स्कन्धस्थितः स वेतालस्तमब्रवीत् - राजन् महति अनुचिते क्लेशे पतितोऽसि तस्मात् तव विनोदाय पुनः कथामेकां कथयामि श्रूयताम्।

व्याख्या- इसके बाद वह राजा विक्रमादित्य फिर उस वेताल को लाने के लिए शीशम के पेड़ की जड़ में गया। वहाँ पहुँचकर जब चारों ओर देखते हैं तब उस वेताल को जमीन पर पड़े हुए तथा अस्पष्ट शब्द करते हुए देखा। तब मृत शरीर में स्थित उस वेताल को कन्धे पर चढ़ा कर उस राजा के चुपचाप वेग से लाना प्रारम्भ करने पर, कन्धे पर स्थित उस वेताल ने उसको कहा- 'महाराज'! बहुत बड़े अनुचित क्लेश में पड़ गए हो, इस कारण से तुम्हारे मनोरंजन के लिए फिर एक कथा कहता हूँ, सुनो

सरलार्थः- राजा विक्रमादित्य पुनः वेताल को लाने के लिए शीशम वृक्ष के नीचे गया। वहाँ वेताल को खोजा, किन्तु देखा की भूमि पर वेताल स्थित होकर शब्द को कर रहा था। तब वेताल को कन्धे पर चढ़ा करके जब राजा जा रहा था तब वेताल ने राजा को कहा कि अत्यन्त अनुचित कर्म में राजा नियुक्त हुए हो। इसलिए राजा के मनोरंजन के लिए वेताल ने एक कथा को सुनाना आरम्भ किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अगमत् - गम् धातु, लुङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- ददर्ष - दृश धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

5.1.3) विभाग-2

अस्ति कालिन्दीतटे ब्रह्मस्थलाभिधः कश्चिदग्रहारः। तत्र अग्निस्वामिति समभवत् कश्चित् वेदपारगो विप्रः। तस्य अतिरुपवती मन्दारवती नाम कन्यका अजनि यां नवानर्घलावण्यां निर्माय विधिर्नियतं निजं स्वर्गनारीपूर्वनिर्माणकौशलं जुगुप्सते। तस्यां शैशवातिक्रान्तायां कान्यकुब्जात् समसर्वगुणोपेतोस्त्रयों ब्राह्मणदारकाः समाययुः। तेषामेकैकः आत्मार्थं तत्पितरं तामयाचत। तत्पिता प्राणव्ययेऽपि तामन्यस्मै दातुमनिच्छन् तन्मध्यादेकस्मै दातुं मतिमरोत्। सा तु कन्या अन्ययोर्बाधात् भीता कियन्तं कालं न पाणिमग्राहयत्। ते च त्रयोऽपि तस्याः मुखेन्दुनिक्षिप्तदृष्टयः चकोरव्रतमालम्ब्य दिवानिशं तत्रैव तस्थुः।

व्याख्या- यमुना नदी के तट पर ब्रह्मस्थल नाम का कोई गाँव है। वहाँ कोई अग्निस्वामी नाम का वेद में पारंगत ब्राह्मण था। उसकी अत्यन्त सुन्दर मन्दारवती नाम की कन्या हुई। नवीन तथा अपूर्व सौन्दर्य से युक्त उस कन्या को बनाकर विधाता ने अवश्य पूर्व में अपनी स्वर्गीय अप्सराओं के निर्माण करने की कला से घृणा की होगी। अर्थात् बहुत सुन्दर वह मन्दारवती थी ऐसा भाव है। उसका बचपन व्यतीत होने पर कान्यकुब्ज देश से समान रूप से सभी गुणों से युक्त तीन ब्राह्मण कुमार आये। उन में

ध्यान दें:

से प्रत्येक ने अपने लिए उसके पिता से उस मन्दारवती की याचना की। उसके पिता ने प्राणनाश होने पर भी उन तीनों से अन्य को कन्या देना न चाहते हुए उन्हीं तीनों में से एक को देने का विचार किया। उस कन्या ने अन्य दोनों को कष्ट पहुँचने के भय से भीत हो कर कुछ दिनों तक अपना पाणिग्रहण नहीं कराया। और वे तीनों उसके मुख रूपी चन्द्रमा पर आँख लगाये हुए, चकोर का व्रत धारण करके दिन रात वहीं रहने लगे।

सरलार्थः- यमुना नदी के तट पर ब्रह्मस्थल नामक एक गाँव था। वहाँ अग्निस्वामी नामक वेदों में निष्णात एक ब्राह्मण था। उसकी मन्दारवती नामक कोई पुत्री थी। उसका इस प्रकार का सौन्दर्य था कि उसके निर्माण के समय में ब्रह्मा ने अप्सराओं के निर्माण कौशल को भी उपकृत नहीं किया। वह जब यौवनावस्था को प्राप्त हुई तब उससे पाणिग्रहण के लिए कान्यकुब्ज से तीन ब्राह्मणपुत्र आए। पिता किसको कन्या को देगा इस प्रकार निश्चय करने में समर्थ नहीं हुआ। पुत्री की भी किसी को कष्ट देकर विवाह करने की इच्छा नहीं थी। वे उसके पिता के वचन से कुछ दिन उसके मुख पर दृष्टि किए रखे थे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- ब्रह्मस्थलाभिधः- ब्रह्मस्थलम् इति अभिधा नाम यस्य तादृषः ग्रामः इति, बहुव्रीहिसमासः।
- वेदपारगः- वेदानाम् ऋग्यजुः सामाथर्वणाम् चतुर्णाम् पारम् अन्तम् गच्छति इति वेदपारगः, सांगवेदः अधीतः इत्यर्थः।
- अजनि- जनी प्रादुर्भावे इति धातु, लुङ् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
- नवानर्घलावण्याम् - बहुव्रीहिसमास।
- शैशवातिक्रान्तायाम् - बहुव्रीहिसमास।
- मुखेन्दुनिक्षिप्तदृष्टयः - बहुव्रीहिसमास।
- तस्थुः - स्था धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन।
- दिवानिशम् - दिवा च निशा च दिवानिशम्।

5.1.4) विभाग-3

अथाकस्मात् समुत्पन्नेन ज्वरदाहेन आर्ता सा मन्दारवती पंचतामाप। ततस्ते विप्रकुमारास्तां परासुं दृष्टां शोकार्ता कृतप्रसाधनां श्मशानं नीत्वा अग्निसादकुर्वन्। ततश्च तेषामेकस्तत्र मठं निमार्य तद्भस्मशय्यायां भैक्ष्येण जीवन्नतिष्ठत्। द्वितीयोऽस्थीनि तस्या उपादाय भागीरथ्यां निक्षेप्तुं जगाम। तृतीयस्तु तापसो भूत्वा देशान्तराणि भ्रमितुमगात्। स तु भ्राम्यन् तापसः वज्रालोकाभिधं ग्रामं प्राप्य कस्यापि विप्रस्य गृहे अतिथिरभूत्।

व्याख्या- इसके बाद एकाएक उत्पन्न ज्वर की जलन से पीड़ित होकर वह मन्दारवती मर गई। इसके बाद वे तीनों ब्राह्मणकुमार उसे मरी हुई देख कर शोक से पीड़ित होकर उसे आभूषणों से तथा पुष्पों से सजा कर श्मशान ले जाकर अग्नि संस्कार कर दिये। उनमें से एक श्मशान में मठ बनाकर भिक्षा के द्वारा जीवन निर्वाह करते हुए उसकी भस्म की शैय्या पर रहने लगा। भिक्षा के द्वारा अपने जीवन का निर्वाह करता हुआ रहता था।

दूसरा ब्राह्मण कुमार मन्दारवती की अस्थियों को लेकर गंगाजी में प्रवाह करने के लिए चला गया।

ध्यान दें:

तीसरा तपस्वी होकर अनेक देशों में भ्रमण करने के लिए गया। वह घूमने वाला तपस्वी वज्रालोक नामक गाँव में पहुँच कर किसी ब्राह्मण के घर में अतिथि हुआ।

सरलार्थः- एक दिन वह मन्दारवती ज्वर से पीडित हुई। ज्वर के कारण उसका निधन हुआ। तब सभी कुमार उसके मरण को देखकर अत्यन्त दु:खी हुए। उसकी अन्तिम क्रिया समाप्त करके एक वहीं श्मशान में मठ का निर्माण करके उसकी भस्म के ऊपर शैय्या बनाकर भिक्षा के द्वारा जीवन आरम्भ किया। एक गंगा में अस्थियों को समर्पित करने के लिए गया। तीसरा ने सन्यासी होकर विभिन्न देशों में भ्रमण करना आरम्भ किया। इस प्रकार भ्रमण के समय में एक बार वह वज्रालोक नामक गाँव को गया। वहाँ एक ब्राह्मण के घर अतिथि हुआ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- ज्वरदाहेन - ज्वरेण सह दाह:
- कृतप्रसाधनाम् - बहुव्रीहिसमास।
- जगाम - गम् गतौ धातु प्रथम पुरुष एकवचन।
- वज्रालोकाभिधम् - बहुव्रीहिसमास।

5.1.5) विभाग-4

तेन च गृहपतिना पूजितो यावत् तत्र भोक्तुं प्रावर्त्तत तावत्तस्य एक: शिशु: रोदितुं प्रवृत्तोऽभवत्। स च शिशु: सान्त्व्यमानोऽपि यदा न व्यरंसीत् तदाऽस्य गृहिणी तं बाहावादाय ज्वलत्यग्नो क्रुद्धा प्राक्षिपत् क्षिप्त एव स कोमलांगस्तत्क्षणात् भस्मसादभूत्। तदवलोक्य स तापस: संजातरोमांच: प्राब्रवीत्- हा धिक्। कष्टम्। प्रविष्टोऽहं ब्रह्मराक्षसवेष्मनि तस्मात् मूर्तं किल्बिषमिदमन्नं नाधुना भक्षयामि। एवं वादिनं तमतिथिं स गृहस्थ: प्रत्यब्रवीत्- ब्रह्मन् पश्य मे पठितसिद्धस्य मृतसंजीवनीं शक्तिम् इत्युक्त्वा पुस्तकमुद्घाटय तां विद्यां बहिष्कृत्य अनुवाच्य च तस्मिन् भस्मानि जलमक्षिपत् क्षिप्तमात्रे च जले स पुत्रस्तथैव जीवन्नुदतिष्ठत्। तत: स तापस: सुनिर्वृतस्तत्र सहर्षं बुभुजे। गृहस्थोऽपि स नागदन्तके पुस्तकमवस्थाप्य भुक्त्वैव तेन तापसेन सह रात्रौ शयनमभजत।

व्याख्या- उस गृहस्वामी के द्वारा सम्मानित होकर वहाँ भोजन करने के लिए चला जब तक ब्राह्मण के एक शिशु ने रोना आरम्भ कर दिया। और वह बच्चा सान्तवना देने पर भी अनुकूल कार्य करने पर मधुर वचन आदि से भी जब चुप नहीं हुआ, तब उस गृहस्थ ब्राह्मण की पत्नी ने क्रोध से उसको भुजा से पकड़कर अग्नि में फेंक दिया। वह कोमल अंगों वाला बच्चा आग में गिरते ही उसी समय भस्म हो गया। वह देखकर उस तपस्वी ने रोमांचित होकर कहा- हा धिक्! अत्यन्त दु:ख है कि मैं न जानते हुए महापतिक के घर में हूँ। मैनें तो ब्रह्मराक्षस के घर में प्रवेश किया है, अत: यह अन्न तो प्रत्यक्ष पाप है मैं नहीं खाउँगा। इस प्रकार कहने वाले उस अतिथि से गृहस्थ ने कहा- 'हे ब्राह्मण! पढ़ने में मुझ सिद्ध पुरुष की संजीवनी शक्ति देखिये' यह कहकर पुस्तक खोल कर उस विद्या को बाहर निकाल कर और पढ़ कर उस भस्म के ऊपर जल छिड़क दिया। जल के छिड़कते ही वह पुत्र उसी प्रकार जीवित होकर उठ खड़ा हुआ। तब उस तपस्वी ने सन्तुष्ट होकर वहाँ प्रसन्नतापूर्वक भोजन किया। वह गृहस्थ भी खूंटी पर पुस्तक को रख कर भोजन करके उस तपस्वी के साथ रात में शय्या पर सो गया।

सरलार्थः- तीसरे ब्राह्मण ने घर जाकर सम्मानित होकर जब भोजन को करना आरम्भ किया तब गृहस्थ का पुत्र रोने लगा। उसका रोना चुप नहीं हुआ इससे क्रोधित हो ब्राह्मण की पत्नी ने उसे अग्नि

ध्यान दें:

में फेंक दिया। उसके इस प्रकार के कार्य को देखकर तीसरे ने सोचा कि वह ब्रह्मराक्षस के घर आ गया। इसलिए यहाँ भोजन नहीं करुँगा। तब अतिथि को कुछ भी खाकर न जाता हुआ देखकर ब्राह्मण ने उसकी पुस्तक को खोलकर मृत संजीवनी मन्त्र का उच्चारण करके उस बालक को जीवित कर दिया। यह देखकर वह तपस्वी शांत मन से वहाँ स्थित हुआ। ब्राह्मण ने भी पुस्तक को रख तपस्वी के साथ भोजन को करके शयन किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कोमलांग - बहुव्रीहिसमास।
- संजातरोमांच - बहुव्रीहिसमास।
- ब्रह्मराक्षसनिवेशनि - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- बुभुजे - भुजोऽनवने इति धातु, लिट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- नागदन्तके - अत्यन्तम् समीपे सकाशे निकटे वा इति तदर्थः।
- अभजत - भज सेवायाम् धातु लङ्लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

5.1.6) विभाग-5

अथ सुप्ते गृहपतौ स तापसः स्वैरमुत्थाय शंकितः स्वप्रियाया मन्दारवत्या जीवनार्थं तां पुस्तिकामग्रहीत्। गृहीत्वैव तस्मात् निर्गत्य रात्रिन्दिवं व्रजन् शनैस्तत् श्मशानमासदत् अद्राक्षीच्च सहसा तं द्वितीयम् उपस्थितं यो हि गंगाम्भसि तदस्थि क्षेप्तुमगात्। अथ प्राप्य च तत्रस्थं तस्या भस्मानि षायिनं तृतीयं निबद्धमठं स तापसः प्रोवाच- मठिका त्यज्यतां भ्रातः। प्रियां तामहमुत्थापयामि इति। ततः ताभ्यां निर्बन्धतः परिपृष्टः पुस्तिकामुद्घाट्य मन्त्रमनुवाच्य मन्त्रपूतानि जलानि तस्मिन् भस्मनि प्राक्षिपत् क्षिप्तमात्रेषु जलेषु सा मन्दारवती जीवन्ती सहसा समुत्तस्थौ। तदा सा कन्या वह्निं प्रणम्य निष्क्रान्ता पूर्वाधिकद्युतिः कांचनेनेव निर्मितं वपुर्बभार। तादृषीं तां पुनर्जीवितां वीक्ष्य त्रयोऽपि ते स्मरातुराः तत्प्राप्त्यर्थमन्योऽन्यं कलहं चक्रुः। एकेनोक्तम् - इयं मन्मन्त्रबलात् जीविता तदेषा ममैव भार्या। अपरोऽब्रवीत्- मदीयेन तीर्थभ्रमपुण्येन इयं जीविता तदेषा ममैव भार्या। तृतीयेन अभिहितं मया भस्मानि रक्षितानि तत एवेयं जीविता तस्मात् ममैवेय प्रणयिनी इति।

व्याख्या- इसके बाद गृहस्वामी जब सो गया तब वह तपस्वी धीरे से उठा। चोरी के कारण शंकित अपनी प्रिया मन्दारवती के जीवन के लिए उसने उस पुस्तक को उठा लिया। ग्रहण करते ही वहाँ से निकलकर रात दिन चलते हुए क्रमशः उस श्मशान में पहुँचा, एकाएक उस द्वितीय ब्राह्मण को भी वहाँ उसने उपस्थित देखा जो गंगा जी के जल में उसकी अस्थि फेंकने के लिए गया था। तब वहाँ जाकर उसकी भस्म के ऊपर मठ बनाकर निवास करने वाले तृतीय ब्राह्मण कुमार को कहा- हे भाई! इस मठ को छोड़ दो, मैं मेरी प्रियतमा मन्दारवती को जीवित करूँगा। तब उन दोनों के द्वारा आग्रह के साथ पूछा गया। उसने पुस्तक को खोलकर मन्त्र पढ़ कर मन्त्र से पवित्र जल उस भस्म के ऊपर छिड़क दिया। जल के छिड़कते ही वह मन्दारवती एकाएक जीवित होकर उठ खड़ी हो गयी। तब वह कन्या अग्नि को प्रणाम कर के बाहर निकली। सोने से बनाए हुए की तरह उसका शरीर पहले से भी अधिक कान्तियुक्त हो गया। इस प्रकार से उसे जीवित देखकर वे तीनों ब्राह्मण कुमार काम पीड़ित होकर उसकी प्राप्ति के लिए परस्पर कलह करने लगे। प्रथम ने कहा- यह मेरे मन्त्र के बल से जीवित हुई है, इसलिए यह मेरी पत्नी होगी। दूसरे ने कहा- मेरे तीर्थ भ्रमण करने के पुण्य से यह जीवित हुई है, इसलिए यह मेरी पत्नी होगी। तीसरे ने कहा- मैनें इसकी भस्म सुरक्षित रखी, उसी से यह जीवित हुई है, इसलिए यह मेरी ही प्रियतमा होगी'।

ध्यान दें:

सरलार्थः- रात्रि में जब घर का स्वामी शयन करता है तब मन्दारवती के पुनर्जीवन के लिए वह तपस्वी धीरे से उठकर पुस्तक को लेकर श्मशान में उसकी भस्म के समीप आ गया। वहाँ उसने देखा कि द्वितीय भी तीर्थयात्रा को समाप्त करके आ गया। और गंगाजल में अस्थि को बहाने गया कुमार भी आ गया। फिर तपस्वी से अस्थि को लिया। उसके बाद मठ में रहने वाले तपस्वी को कहा कि इस प्रिया को जीवित करूँगा इसलिए तुम मठ को छोड़ दो। फिर अन्य तपस्वी ने अभिमन्त्रित किया जल उसकी भस्म के ऊपर छिड़क दिया। उसी क्षण से वह मन्दारवती पुनः जीवित हो गई। वह पहले की अपेक्षा अधिक सुन्दर थी। तब उसे देखकर तीनों ने ही उसे प्राप्त करने की इच्छा की। एक ने कहा कि उसने मन्त्र के बल से जीवन को दिया इसलिए वह उसकी है। दूसरे ने कहा कि उसने तीर्थादि का भ्रमण करके पुण्य को अर्जित किया इसलिए वह उससे जीवित हुई अतः वह उसकी होगी। तीसरे ने कहा कि यदि वह उसकी भस्म की सम्यक् रूप से रक्षा नहीं करता तो कहा से उसे जीवित करते इसलिए वह उसकी पत्नी होगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कोमलांग - बहुव्रीहि समास।
- शंकित - शंका संजाता अस्य इति शंकितः।
- जीवनार्थम् - चतुर्थी तत्पुरुष समास।
- निबद्धमठम् - बहुव्रीहि समास।
- पूर्वाधिकद्युतिः - बहुव्रीहि समास।

5.1.7) विभाग-6

हे महीपते तेषां विवादनिर्णये त्वमेव शक्तः तद्ब्रूहि कन्याऽसौ कस्य एतेषां भार्या भवितुमर्हति। यदि जानन् मृषा वदिष्यसि तदा ते मूर्द्धा विदलिष्यति। इति वेतालादाकर्ण्य स राजा एवम् अभ्यधात् - यः क्लेशेन मन्त्रमानीय एनामजीवयत् स खलु पितृकार्यकरणात् न पतिः। यश्च तस्या अस्थीनि गंगायां क्षेप्तुं गतः स पुत्रकार्यकरणात् पतिर्भवितुमर्हति इति।

इत्थं नृपात् त्रिविक्रमसेनादाकर्ण्य स वेतालस्तस्य स्कन्धादतर्कितं स्वपदं प्रायात। राजा च भिक्षुकार्यार्थं पुनस्तं प्राप्तुं मनो बबन्ध प्राणात्ययेऽपि महासत्त्वाः प्रतिपन्नमर्थम् असाधयित्वा न निवर्तन्ते।

व्याख्या- हे महाराज! उनके विवाद का निर्णय करने में तुम ही समर्थ हो। फिर बताओ उस कन्या को इनमें से किस की पत्नी होनी चाहिए। यदि जानते हुए भी झूठ कहोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। वेताल से सुनकर उस राजा विक्रमादित्य ने कहा-'जिसने क्लेश से मन्त्र लाकर इस मन्दारवती को जीवित किया, वह तो पिता का कार्य करने अर्थात् जन्म देने से इसका पति नहीं हो सकता। और जो उसकी अस्थियों को गंगा में फेंकने के लिए गया वह भी पुत्र का कार्य करने से पति नहीं हो सकता है। जिसने उसी भस्म की शय्या का आलिंगन कर तपस्या को किया। श्मशान में भयानक निर्जन स्थान में जिसने प्रेम के कारण प्रिय के समान कार्य को किया वह ही इसका पति हो सकता है। इस प्रकार राजा विक्रमादित्य से सुनकर वह वेताल उसके कन्धे पर से अपने स्थान पर चला गया। राजा ने सन्यासी के कार्य के लिए फिर उसको प्राप्त करने का निश्चय किया। महासाहसी पुरुष प्राण के नष्ट होते रहने पर भी स्वीकार किए हुए कार्य को बिना पूरा किए हुए रुकते नहीं है।

सरलार्थः- कथा सुनाकर वेताल ने राजा को कहा कि उनके विवाद के समाधान में राजा ही

समर्थ है। उनमें से कौन उसका पति होगा। यदि उत्तर जानते हुए भी नहीं बताओगे तो आपके सिर के सौ टुकड़े होंगे। फिर राजा ने कहा कि जिसने मन्त्रादि से जीवन दिया उसने पिता का कार्य किया। जो गंगा में अस्थियों को प्रवाहित करने गया उसने पुत्र का कार्य किया। जिसने इस घोर श्मशान में उसकी भस्म के ऊपर ही सोकर समय व्यतीत किया उसने ही वास्तव में पति का कार्य किया। इसलिए वह ही उसे पत्नी के रूप में प्राप्त करेगा। इस प्रकार से उत्तर को प्राप्त कर वेताल पुन: अपने स्थान पर चला गया। राजा भी वहाँ गया, क्योंकि महात्मा एक बार जो कार्य स्वीकार करते है उसकी जब तक समाप्ति नहीं होती तब तक उसे छोड़ कर नहीं जाते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अतर्कितम् - न तर्कितम् तर्क: विचार: इत्यर्थ:।
- महासत्त्वा: - बहुव्रीहिसमास।

पाठ सार

राजा विक्रमादित्य सन्यासी के कार्य को सम्पन्न करने के लिए श्मशान जाकर वेताल को लाने के लिए जब आता है तब वेताल ने उसे एक कथा को सुनाना आरम्भ किया। यमुना नदी के तट पर ब्रह्मस्थल नामक गाँव था। वहाँ अग्निस्वामी नामक एक ब्राह्मण था। उसकी पुत्री मन्दारवती थी। उसने जब यौवनावस्था को प्राप्त किया तब कान्यकुब्ज से तीन ब्राह्मण आए। उन्होंने उसकी प्रार्थना की। तब किसे वह देंगे इसके निश्चय के लिए उसके पिता ने कुछ समय लिया।

एक दिन वह बुखार से ग्रस्त हुई, उस ज्वर से पीड़ित हो मृत्यु को प्राप्त हुई। तब उसकी अन्तिम क्रिया को करके एक उसकी भस्म के ऊपर शय्या बनाकर मठ का निर्माण कर वहाँ रहना आरम्भ किया। एक उसकी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने गया। दूसरा तपस्वी होकर अन्य देश को गया। एक बार वह तपस्वी एक ब्राह्मण के घर अतिथि हुआ। वहाँ उसने देखा कि ब्राह्मणी ने अपने पुत्र को अग्नि कुण्ड में फेंक दिया उसके क्रन्दन को रोकने के लिए। वह जलकर राख हुआ। उसे देखकर तपस्वी ने कुछ न खाने की इच्छा की । तब ब्राह्मण ने एक पुस्तक को खोलकर मन्त्रोच्चारण से उसे पुन: जीवित किया। यह देखकर रात्रि में जब सब सो गए तब उस पुस्तक को लेकर वह श्मशान आ गया। तब दूसरा भी वहाँ आ गया। उसने मन्त्र पढ़े जल को उसके ऊपर छिड़क दिया। तब वह मन्दारवती पुन: जीवित हुई। तब कौन उसे प्राप्त करेगा इस विषय में उनके मध्य में द्वन्द्व आरम्भ हुआ। उसके समाधान के लिए वेताल ने राजा को कहा- तब राजा ने कहा कि जिसने मन्त्र से पुन: जीवन दिया उसने पिता का कार्य किया। जिसने अस्थियों को गंगा में प्रवाहित किया उसने पुत्र का कार्य किया। जो उसकी भस्म जहाँ घोर श्मशान में थी वहाँ ही था उसने ही पति के कार्य को किया। दु:ख में भी उसे छोड़कर नहीं गया। इसलिए वह ही उसका पति है। वेताल उत्तर को सुनकर पुन: अपने स्थान को गया। राजा ने भी उसका अनुसरण किया। क्योंकि महन्त व्यक्ति जब किसी भी कार्य को स्वीकार करते हैं तब उसे समाप्त करके ही रूकते हैं बिना पूरा किए कभी नहीं रूकते हैं।

पाठगत प्रश्न

1. कन्या के ग्राम का नाम क्या है?
2. ब्रह्मस्थलग्राम किस नदी के तीर पर था?

ध्यान दें:

ध्यान दें:

3. विप्र का नाम क्या है?
4. कथा की नायिका का नाम क्या है?
5. तीन कुमार कहाँ से आए?
6. तपस्वी किस गाँव में ब्राह्मण का अतिथि हुआ?
7. तपस्वी ने किसके कार्य को किया?
8. जो गंगा को गया उसने किसके कार्य को किया?
9. कौन मन्दारवती का पति है?
10. महाजन क्या बिना किए नहीं रूकते?
11. वहाँ जब चारों तरफ देखते हैं तब उस वेताल को भूमि पर.....देखा।
12. राजन्, बहुत ही अनुचित.....पड़ गए हो।
13. यमुना नदी के तीर पर.....कोई गाँव है।
14. अग्निस्वामी के अत्यन्त रूपवती.....नाम की कन्या हुई।
15. उनमें से एक ने वहाँ मठ का निर्माण कर उसकी भस्म की शय्या पर.....जीवन व्यतीत किया।
16. द्वितीय उसकी.....लेकर गंगा में बहाने चला गया।
17. वह घूमने वाला तपस्वी.....नामक गाँव को प्राप्त कर किसी विप्र के घर अतिथि हुआ।
18. जिसने क्लेश से मन्त्र को लाकर इसे जीवित किया वह निश्चित ही.....पति नहीं है।
19. ..... स्वीकार किए हुए कार्य को बिना पूरा किए नहीं रूकते है।
20. स्तम्भ- (क) को मिलाओ-

	स्तम्भ- (क)	**स्तम्भ- (ख)**
1.	ग्राम का नाम	मठवासी
2.	विप्र	महासत्त्वा
3.	तीन कुमार	अग्निस्वामी
4.	नदी	मन्दारवती
5.	अग्निस्वामी की कन्या	ब्रह्मस्थलम्
6.	तापसः	पितुः कार्यम्
7.	मन्दारवती का पति	कालिन्दी
8.	प्रतिपन्नमर्थं साधयन्ति	कान्यकुब्ज से

5.2) कथा उपसंहार

प्रस्तावना

शिष्टता का पालन और दुष्टता का नाश हमारे भारतीयों की परम्परा है। कैसे वेताल ने विक्रमादित्य के विलम्ब को उत्पन्न किया था, अथवा कैसे प्रश्नोत्तर से उसे बांधा था- इस विषय के अवलोकन के लिए ही यह भाग प्रारम्भ किया। यहाँ हम देखेंगे कैसे राजा दुष्ट का नाश करते हैं अथवा वेताल ने सत्कर्मी राजा की सहायता करी।

5.3) मूलपाठ

क्षान्तिशील की आज्ञा के अनुसार राजा विक्रमादित्य वेताल को लेकर जब तक भिक्षु के समीप आता तब तक मार्ग के बीच में वेताल ने उससे कथा को सुनाकर प्रश्न पूछा। तब नियम के अनुसार उस राजा के उपयुक्त उत्तर को सुनकर पुनः शीशम के वृक्ष पर चला जाता था। इस प्रकार चौबीस बार हुआ। फिर उस वेताल ने राजा को सत्य कहा।

वस्तुतः वह भिक्षु साधु सन्यासी नहीं अपितु मूर्ख और लोभी है। वह विद्याधर पद की प्राप्ति के लिए यज्ञ करता था। परन्तु उसके यज्ञ में वेताल के पूजन को किसी भी महान व्यक्ति अर्थात् जो सज्जन दया, दाक्षिण्य आदि सत्वगुणों से सम्पन्न इस प्रकार से किसी की बलि चाहिए। इस प्रकार के गुणों से सम्पन्न राजा विक्रमादित्य ही होगा ऐसा विचार कर उस मूर्ख भिक्षु ने राजा को छल कपट से वेताल को लाने के लिए भेजा। वह लोभी यदि विद्याधर पद को प्राप्त करेगा तो जगत का अकल्याण होगा। इसलिए वह रोकने योग्य है। इस प्रकार की व्याख्यायित कर वेताल ने राजा को कहा- मैं एक मृत शरीर का आश्रय लेता हूँ। तुम उस शव को ले जाओ। वह भिक्षु उस शव को आधार बनाकर मेरी पूजा करेगा। पूजा के बाद जब वह भिक्षु राजा को प्रणाम के लिए आह्वाहन करेगा तब- 'मैंने वैसे प्रणाम नहीं किया, पहले तुम दिखाओ, फिर मैं वैसा करुंगा' इस प्रकार कहना-जब भिक्षु वैसा सम्पादित करे राजा उसका सिर अलग कर दें।

इस प्रकार समझकर राजा वेताला धिष्ठित शव को कन्धे पर रखकर उस भिक्षु के पास गया। वहाँ जाकर राजा ने देखा कि श्मशान के चारों ओर अस्थिचूर्ण, कपाल और विस्तृत चिता की राख है। राजा ने जाकर उस शव को उचित स्थान पर रखा। फिर उस भिक्षु ने उस शव की पूजा आरम्भ की। पूजा के बाद राजा को कहा- राजा, यह मन्त्राधिराज है। यह आपकी सभी मनोकामना को पूरा करेगा। इसलिए साष्टांग प्रणाम करो। इस प्रकार सुनकर वेताल के उपदेशानुसार उसने भिक्षु को कहा- मैं तो राजा हूँ। इसलिए इस प्रकार के साष्टांग प्रणाम को नहीं जानता हूँ। फिर आप ही पहले दिखाएं। इस प्रकार सुनकर वह भिक्षु साष्टांग प्रणाम कैसे होता है इसे बताने के लिए जब भूमि पर लेटा तब विक्रमादित्य ने अपनी तलवार से उसके सिर को अलग कर दिया। फिर उसके हृदय को चीर के हृदय कमल और उसका सिर वेताल को दिया। तब धन्यवाद करते हुए वेताल ने शव से बाहर आकर कहा- राजा आप वीर हैं। यह भिक्षु जो विद्याधर को चाहता था वह आप प्राप्त करेंगे। फिर वेताल ने अभीष्ट वर के लाभ के लिए राजा से अनुरोध किया। तब राजा ने कहा- कि पच्चीस कथाएँ कही है वे चिरकाल तक संसार में प्रसिद्ध हो। तब वेताल ने कहा कि जो इन कथाओं को सुनेगा अथवा पाठ करेगा वह पाप से मुक्त होगा। और जहाँ यह कथा कही जाएगी वहाँ यक्ष, राक्षस आदि स्थित नहीं होंगे। इस प्रकार कह वेताल अन्तर्हित हो गया।

फिर साक्षात् महादेव सभी गणों के साथ वहाँ आए। उन्होंने राजा की प्रशंसा करते हुए उसे अपराजित नामक खड्ग को दिया। उसके बाद वह राजा प्रातः अपने भवन को गया। महादेव के प्रसाद से राज्य का शासन करते हुए मरने के बाद विद्याधरेन्द्र पद को प्राप्त कर अन्त में भगवान को प्राप्त किया। इस प्रकार ही यह कथा का उपसंहार है। कल्याण हो।

पाठगत प्रश्न-2

21. भिक्षु का नाम क्या है?

22. राजा कितनी बार वेताल को लेकर श्मशान की ओर लाया?

ध्यान दें:

ध्यान दें:

23. वेताल के वचनों के बाद कौन आविर्भूत हुए?

24. महादेव ने राजा को क्या दिया?

25. भिक्षु को कौन-सा पद अभीष्ट था?

पाठ सार

तृतीय कथा में मन्दारवती के मरने के बाद भी जिन तीन ब्राह्मणों की प्रीति उसके प्रति थी उनमें से एक श्मशान में रहा, एक अन्य देश को गया और गंगा में अस्थि विसर्जन के लिए के लिए गया। तपस्वी के मन्त्र से वह पुनः जीवित हुई। तब वह किसकी होगी इस प्रश्न पर राजा ने कहा कि जो श्मशान में था वह घोर, भयानक, निर्जन स्थान पर भी उसके पास ही था इस कारण वह ही योग्य वर है।

चतुर्थ में हमने देखा कि कैसे वेताल ने राजा को विलम्ब किया था। वस्तुतः वह भिक्षु क्षान्तिशील सज्जन नहीं मूर्ख था। वह अपने विद्याधर पद की प्राप्ति के लिए राजा की बलि चाहता था। इसलिए उसे अपने कार्य की सिद्धि के लिए चुना। परन्तु वेताल ने उससे सारा वृत्तान्त कहा। उसने राजा से कहा कि जब वह भिक्षु साष्टांग प्रणाम के लिए कहेगा तब पहले तुम दिखाओ फिर देखकर वैसा करूंगा ऐसा कहोगे। इस प्रकार जानकर राजा विक्रमादित्य वेतालाधिष्ठित शव को लेकर श्मशान को गया। वहाँ उस भिक्षु ने शव का पूजन किया। पूजा के बाद अनेक प्रकार के प्रशंसनीय वचनों के द्वारा राजा को प्रणाम के लिए कहा। तब वेताल के वचनों को स्मरण करके राजा ने पहले प्रणाम करके दिखाओ भिक्षु से कहा। जब तक वह भिक्षु प्रणाम कर रहा था तब तक वेताल के वचनानुसार अपनी तलवार से उसका सिर काट दिया। फिर उसका सिर और हृदयकमल वेताल को दिया। उससे प्रसन्न वेताल ने शव से आकर कहा कि राजा विक्रमादित्य भूमि पर राज्यशासन के बाद विद्याधरेन्द्र पद को प्राप्त करेगा। तब भगवान महादेव वहाँ आर्विभूत हुए उन्होंने राजा को एक अपराजित नामक तलवार दी। इस प्रकार के भगवान के अनुग्रह से विक्रमादित्य ने भूमि पर राज्य शासन कर फिर स्वर्गलोक में शासन किया।

आपने क्या सीखा

1. महान व्यक्ति स्वीकार किए गए कार्य को पूरा किए बिना नहीं रूकते हैं।
2. भारतीय संस्कृति में कन्यादान का विशेष महत्व है।
3. राजा विक्रमादित्य की बुद्धि तेज और विचारकुशल है।

योग्यता विस्तार

सन्दर्भग्रन्थ परिचय

इस ग्रन्थ में राजा विक्रमादित्य और वेताल की कथा वर्णित है। इस पाठ में एक कथा ग्रन्थ का उपसंहार दिया गया है। कोई और अधिक पढ़ना चाहता है तो इस ग्रन्थ को पढ़े

1. वेतालपंचविंशतिः - प्रकाश हिन्दी व्याख्या

   व्याख्याकार - पण्डित दामोदर झा

   प्रकाशकः - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-1

भाव विस्तार

7. इस पाठ में विक्रमादित्य की सम्यक् बुद्धि, शिष्टता का पालन और दुष्टों के नाश के विषय में जानते हैं। सौ बार कार्य की सफलता न हो फिर भी पुनः एक बार प्रयत्न करना चाहिए, उस कार्य को छोड़ना नहीं चाहिए - यह बोध होता है।

8. इन कथा को नाटक के रूप में मंचादि पर मंचन कर सकते हैं। उससे भाषा का विस्तार भी होगा, सभी को ज्ञान भी होगा।

9. एक पत्रिका मिलती है उसका नाम है चन्दा मामा। उस पत्रिका की प्रत्येक संख्या में वेताल पंचविंशति की कथा प्रकाशित करते हैं। वहाँ उसके जैसी कथा भी मिलती हैं। उससे छात्र अधिक कथा ग्रन्थों को पढ़ सकते हैं।

10. वेताल पंचविंशति की अनेक कथा युट्यूब पर पिक्चर के रूप में अथवा नाटक के रूप में मिलती हैं। उसे भी छात्र देख सकते हैं।

11. अनेक दूरदर्शन चलाने वाली संस्था धारावाहिक के रूप में प्रत्येक रविवार को वेताल पंचविंशति की कथा दिखाते हैं। उसे भी सभी देख सकते हैं।

12. यहाँ जो कथा दी गई है उनमें कौन नायक है। और किस प्रकार के गुणों का प्रकाशक है। उसके गुण को यदि हम स्वीकार करेंगे, जैसा नायक व्यवहार करता है वैसा अनुसरण करेंगे तो हमें अवश्य ही लाभ होगा।

भाषा विस्तार

1. यहाँ बहुत से अल्पसमास युक्त शब्द है। उनकी तालिका को बनाना चाहिए। फिर उस तालिका को पढ़ने से नवीन शब्दों का ज्ञान और समास बोध भी सरलता से होता है।
2. नवीन सुबन्त शब्दों के रूप को लिखकर अभ्यास करना चाहिए।
3. नए तिङन्त शब्दों लट्लकार में, लङ्लकार में, लृट्लकार में, विधिलिङ्लकार में, लुट्लकार में, और लुङ्लकार में रूप पत्र पर लिखकर अभ्यास करना आवश्यक है।
4. जो अव्यय शब्द दिखाई दे उनकी भी तालिका को प्रस्तुत करना चाहिए। स्वयं जब कोई भी उत्तर लिखें तब इनका प्रयोग करना चाहिए।

पाठान्त प्रश्न

1. कैसे मन्दारवती के पिता ने कितने समय तक वहाँ रहने के लिए उससे कहा।
2. तपस्वी के वृतान्त को अपने वचनों में वर्णित कीजिए?
3. 'मन्दारवती का स्वामी कौन है' विक्रमादित्य के वचन को व्याख्यायित कीजिए?
4. कथा के सार को सरल शब्दों में प्रकट कीजिए।
5. वेताल के वचनानुसार विक्रमादित्य ने कैसे दुष्टों का दमन किया इस विषय को विस्तार से वर्णित कीजिए?
6. वेताल ने राजा को क्या आदेश दिया, व्याख्या कीजिए?

ध्यान दें:

पाठ-5

वेताल पच्चीसी-2

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. ब्रह्मस्थल
2. यमुना नदी
3. अग्निस्वामी
4. नायिका का नाम मन्दारवती
5. कान्यकुब्ज से
6. वज्रालोक नामक गाँव में
7. पिता का
8. पुत्र का
9. जो श्मशान में मन्दारवती की भस्म के साथ था।
10. स्वीकार किए कार्य को बिना पूरे किए।
11. शब्द करते
12. क्लेश में
13. ब्रह्मस्थल नामक
14. मन्दारवती
15. भिक्षा के द्वारा
16. अस्थियों को
17. वज्रालोक नामक
18. पिता का कार्य करने से
19. महान व्यक्ति
20. स्तम्भ
    1. ब्रह्मस्थल
    2. अग्निस्वामी
    3. कान्यकुब्ज से
    4. कालिन्दी
    5. मन्दारवती
    6. पितुः कार्यम्
    7. मठवासी
    8. महासत्व

उत्तर-2

21. क्षान्तिशील
22. चौबीस बार
23. भगवान महादेव
24. अपराजित नामक तलवार
25. विद्याधरेन्द्र पद को